बर्लिन (जर्मनी)
मई २४, १९९९

सन्देश संख्या ६

रतिवासना एवम् ब्रह्मचर्य

रतिवासना स्वयं में इतना निषेधात्मक नहीं है जिसकी निन्दा अथवा जिस पर विजय प्राप्त करना अनिवार्य हो।

यह जीवन का केवल एक पहलू है और इसलिए जीवन में इसका प्रभुत्व नहीं होना चाहिए।

रतिवासना को कामुकता के स्तर तक विकृत न होनें दें बल्कि इसे प्रेम और दिव्य प्रबोध की अभिव्यक्ति बनायें।

हमारे लिये एक मध्यम मार्ग बने जहाँ न तो दिशाहीन रतिवासना हो और न ही यंत्रणापूर्ण ब्रह्मचर्य।

रतिवासना एक कोमल पुष्प है। इसे स्नेहपूर्वक पोषा और सँजोया जाए। यदि इसे शिथिल कर दिया जाए तो यह शक्ति का मूर्खतापूर्ण अपव्यय होगा और इसका क्रूरता से दमन किया जाए तो यह एक सुकुमार एवं सुन्दर वस्तु को न करना होगा। इसे स्वतः अनावृत्त एवं प्रस्ङ्गुटित होने दें – न तो इसे अस्वीकार करें और न ही इसकी दासता स्वीकार करें।

प्रेम सबसे महान वस्तु है, इसमें आत्मकेन्द्रित गतिविधियों की सम्पूर्ण समाप्ति है।

प्रेम करना शाश्वतता का बोध प्राप्त करना है।

प्रेम ज्ञान/समझदारी का उत्कष है। प्रेम करना ''निर्मन भाव'' में होना है।